E-Pathshala

Practical Meaning of Jainism

Chapter - 2... B

वासक्षेप

वासक्षेप को लेकर एक समझ :

- जैन धर्म में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संप्रदाय की परंपरा अनुसार वासक्षेप के द्वारा आशीर्वाद स्वीकार करने के समय द्रव्य समर्पण की एक सुंदर व्यवस्था स्थापित कि गई है ।
- पैसा थाली में रखने के बाद हमें पूजन लक्ष्मी / पैसो का नही करना है परंतु ज्ञान का अथवा गुरु के चरण अंगूठे का पूजन करना है ।
- अपना दाहिना अंगूठा एवं अनामिका उंगली से गुरु के चरण अंगूठे की वासक्षेप पूजा करने के वक्त अपने मन में उनके संयम जीवन, ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग, धर्म आराधना, संयम साधना, प्रभु उपासना, मंत्र जाप साधना का एक अंश भी हमें प्राप्त हो ऐसा अंतर भाव बनाए रखना है ।
- ज्ञानपूजा करने के वक्त अपने मन में श्री सरस्वती देवी की अखंड कृपा प्राप्त हो और अनंतकालीन ज्ञानावरणीय कर्मक्षय हो ऐसी भावना बनाए रखना है ।

द्रव्य उपयोग की सूचना :

- गुरुपूजन का द्रव्य पू. साधु-साध्वीजी भगवंत की वैयावच्च, सेवा, भक्ति और सभी प्रकार की आवश्यक एवं अनिवार्य व्यवस्था में उपयोग किया जाता है ।
- ज्ञानपूजन का द्रव्य सिर्फ पू. साधु-साध्वीजी भगवंत के अभ्यास, स्वाध्याय और अध्ययन तथा पू. गुरुदेव द्वारा लिखित पुस्तक को प्रकाशित करने में एवं ज्ञान प्रचार के किसी भी आयोजन के लिए उपयोग में लिया जाता है ।

एक श्रेष्ठ समर्पण भाव :

- इन दोनों महान लाभ प्राप्त होने के कारण यथाशक्ति तथा भक्ति के आधार पर हमें सदैव श्रेष्ठ द्रव्य / रुपये / पैसो से ही गुरुपूजन और ज्ञानपूजन करने का उच्च भाव बनाए रखना चाहिए ।

एक स्पष्ट समझ :

- लक्ष्मी एवम् धन से पूजा करने के पीछे मुख्यत्वे यह भाव बताया गया है / यह चिंतन दिया गया है कि - हमारी जिंदगी में हम धन के मोह से मुक्त होवे, लक्ष्मी की लालसा से दूर होवे और सचमुच पूर्ण त्याग की दुनिया में प्रवेश करे एवं ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करे ।

Courtesy by : SGR TEXTILE HOUSE LLP Vapi-Mumbai